नेहरु युवा केन्द्र संगठन

विश्व का सबसे बड़ा युवा नेटवर्क

साथ साथ
कल की ओर...

नेहरू युवा संदेश

नेहरू युवा केंद्र संगठन की पत्रिका एवं अच्छे प्रयासों का संकलन

मई - अगस्त 2014

भारतीय युवाओं की भावनाओं का उत्सव

महानिदेशक की कलम से

नई सरकार ने नए जोश के साथ सामान्य रूप में हम सभी में और विशेष रूप से युवाओं में नया उत्साह जगाया है। सरकार द्वारा युवा और युवा केंद्रित मुद्दों पर ध्यान देने से युवाओं पर सकेंद्रित योजनाओं और कार्यक्रमों पर एक बड़ा जोर और जिम्मेदारी रखी गई है। देश के युवाओं का सबसे बड़ा नेटवर्क होने के नाते नेहरू युवा केंद्र संगठन को युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने में एक सक्रिय पहल आरंभ करनी होगी। सरकार का सबसे अधिक जोर युवाओं के कौशल विकास पर है और युवा आबादी को अधिक उत्पादक और सशक्त बनाने के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जा रहे हैं। इस पहल को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता से, सरकार ने युवा मामलों के मंत्रालय का पुनर्गठन किया है और इन दो विषयों के महत्व पर जोर देने के लिए कौशल विकास और उद्यमशीलता को इसके दायरे में लाया गया है। मंत्रालय के नाम में सही बदलाव कर इसे-कौशल विकास, उद्यमिता, युवा मामले एवं खेल मंत्रालय कर दिया गया है। हमने एक बड़ी भूमिका की परिकल्पना की है और हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए और बेरोजगार युवाओं को प्रेरित करने, उनका नामांकित करने और मार्गदर्शन करने की कार्रवाई शुरु की जानी चाहिए। वास्तव में यह राष्ट्र को दिया गया एक महान अवसर है और अब इसे सही व्यक्तियों तक पहुँचाने में मदद करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

नेहरू युवा सन्देश का वर्तमान संस्करण हमारे युवाओं द्वारा प्राप्त की गई बड़ी उपलब्धियों और सफलताओं का इतिहास है। सफलता की कहानियां दर्शाती हैं कि ईमानदारी से की गई छोटी छोटी पहल, कैसे बड़े बदलाव लाती है। आपके पास भी अपने गांव या समुदाय की सेवा शुरु करने का अवसर है, आप भी अपने क्षेत्र में एक सामाजिक विकास परियोजना शुरु कर सकते हैं और हम सुनिश्चित करेंगे कि आपको हर संभव मदद, समर्थन और मार्गदर्शन मिल सके। आप गरीब और योग्य युवाओं की पहचान कर सकते हैं, जिन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है, आपकी पहल एक गरीब परिवार को आजीविका, एक प्रतिभाशाली युवा को अवसर और एक अकुशल व्यक्ति को कौशल प्रदान कर सकती है। एक लोकप्रिय चीनी कहावत है ''एक आदमी को एक मछली देने से तुम एक दिन के लिए उसका पेट भर सकते हो, लेकिन उसे मछली पकड़ना सिखा दो तो तुम जीवन भर के लिए उसका पेट भर सकते हो।'' राष्ट्रीय युवा कोर (एनवाईसी) के स्वयंसेवकों को इस मौके का लाभ उठाना चाहिए और केवल अपनी प्रतिभा में ही सुधार न करके वरन एक उज्ज्वल भविष्य में रुचि रखने वाले अन्य युवाओं को को भी विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अवसरों के मार्ग का दरवाजा खुलने ही वाला है और हम सबको तैयार रहना चाहिए और तत्परता से सरकारी प्रयास के फल को देश के अछूते कोने-कोने में पहुँचाना चाहिए।

मैं आप सभी के लिए एक सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

डा. प्रभाकांत

महानिदेशक

विषय सूची

05 आगे बढ़ें – नेतृत्व करें

06 गरीबों का सशक्तिकरण
जुनून से हुसैन को मिली कामयाबी

08 वाई.सी. परमेश की कहानी
सेवा के जज़्बे से बदल गई गाँव की तस्वीर

09 शेर दिल

10 वोट का अधिकार
जग गए युवा, रच दिया इतिहास

12 वेलु मुरुगन की प्रेरणा
नौजवानों के हाथों से निखर गई झील

13 विश्वास की पटरी पर लौट आया गाँव

14 रघुवीर सिंह की पहल
गाँव में बह रही है विकास की धारा

15 आकाश ही सीमा है

16 युवाओं का दायित्व

18 आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम
हम चलेंगे साथ–साथ एक दिन

20 राष्ट्रीय एकता शिविर
हर कदम बढ़ते चले, मंजिलें पाने को

22 युवा प्रवासी भारतीय दिवस
अपने युवाओं से जुड़ने की अनूठी पहल

23 युवा पर्यावरण सेना
ग्रीन वोटिंग का अनोखा अभियान

मुख्य संपादक
डॉ. प्रभाकांत, आईआरएस

कार्यकारी संपादक
एस.के. ठाकुर

संपादक
चौधरी मुहम्मद आतिफ

उप संपादक
भुवनेश जैन

सलाहकार
ब्लेज
सिंधुजा खजूरिया
सिद्धार्थ गिरिराज गोविल

रूपरेखा
चित्रा शर्मा
थिंकिंग कैप क्रिएटिव एजेन्सी

प्रकाशक
नेहरू युवा केन्द्र संगठन

मुद्रांकन
मित्तल ऐंटरप्राइजेज, दिल्ली

"स्वतंत्रता की सुरक्षा करना, केवल सैनिकों का काम नहीं है। पूरे देश को मजबूत होना होगा। हम सभी को अपने संबंधित क्षेत्रों में उसी दृढ़ संकल्प के साथ काम करना है जो लड़ाई के मोर्चे पर एक योद्धा को प्रेरित और उत्साहित करता है। और इसे केवल शब्दों में नहीं, बल्कि वास्तविक कामों से दिखाया जाना चाहिए।"

- लाल बहादुर शास्त्री

सर्बानन्द सोनोवाल

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
कौशल विकास, उद्यमिता,
युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय,
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि नेहरु युवा केन्द्र संगठन देशभर में कार्यरत 623 जिला केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं के नेतृत्व विकास एवं स्वंयसेवी भावना के मूल्यों को संचारित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है ।

ग्रामीण युवाओं को विकास में भागीदार बनाने के लिए उनकी क्षमताओं, प्रतिभाओं को तलाशने, तराशने और सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए बेहतर अवसर देने की जरूरत है । नेहरू युवा केन्द्र संगठन अपने सीमित साधनों से असीमित ऊर्जा का बेहतर उपयोग करने के लिए अपने कार्यक्रमों को बेहतर दिशा में ले जाने के लिए हर समय प्रयत्नशील है ।

नेहरू युवा केन्द्र संगठन की धुरी युवा मंडल है । संगठन की सफलता ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित युवा मंडल की मानवीय, राष्ट्रीय एवं प्रकृति संरक्षित सेवा के मूल्यों से ओतप्रोत गतिविधियों पर निर्भर है । युवा मण्डलों ने देश के हर कोने में स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए अपनी स्वंयसेवी भावना एवं उदात्त मूल्यों का परिचय दिया है । सरहद हो या रेगिस्तान, पहाड़ हो या समुद्र, आतंक के साये में जी रहे इलाके हों या आपदा से जूझ रहे क्षेत्र, युवा मंडलों ने संकटग्रस्त क्षेत्र में शांति, विकास, सद्भावना एवं मानवीय मूल्यों से बेहतर समाज रचने के लिए ऐतिहासिक कार्य कर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं ।

युवाओं एवं युवा मण्डलों के सशक्तिकरण हेतु सरकार एवं नेहरू युवा केन्द्र संगठन समर्पित है । हमें आने वाले दिनों में अपनी भूमिका को बेहतर, जीवंत और महत्वपूर्ण बनाना है ताकि असमानता, अशिक्षा, हिंसा, बेरोजगारी के दंश से हम सभी पीड़ितों, वंचितों को मुक्ति दिला सकें । युवाओं को सामाजिक जीवन शिक्षा के साथ–साथ आर्थिक उन्नयन हेतु कौशल विकास के लिए हम सभी कृत संकल्पित है । मैं नेहरू युवा केन्द्र संगठन परिवार को उनके तय संकल्पों को पूरा करने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ ।

(सर्बानंद सोनोवाल)

401, 'सी' विंग. शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110 001, फोन : 91.11.2338 1185, 2338 652, फैक्स 91–11–2338 1898
वेबसाईट : http://www.yas.nic.in

आगे बढ़ें – नेतृत्व करें

श्री सर्बानंद सोनोवाल

माननीय राज्य मंत्री, कौशल विकास, उद्यमिता, युवा मामले और खेल मंत्रालय ने नेहरू युवा केन्द्र संगठन और राष्ट्रीय सेवा योजना के अधिकारियों को संबोधित किया

17 जुलाई 2014 को नई दिल्ली में नेहरू युवा केंद्र संगठन (ने.यु.के.सं.) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की एक संयुक्त बैठक बुलाई गई थी। श्री सर्बानंद सोनोवाल, माननीय राज्य मंत्री, कौशल विकास, उद्यमिता, युवा मामले और खेल मंत्रालय ने बैठक की अध्यक्षता की। श्री राजीव गुप्ता, सचिव (युवा मामले), श्री लालकृष्ण गुप्ता, संयुक्त सचिव (युवा मामले), डॉ प्रभाकान्त, महानिदेशक (ने.यु.के.सं.) और श्री गीरेश टुटेजा, कार्यक्रम सलाहकार (एनएसएस) मंच पर आसीन थे। देश भर से नेहरू युवा केन्द्र संगठन के मण्डल निदेशकों तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारियों को समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

भाषण के प्रमुख अंश

''मुझे ने.यु.के.सं और एनएसएस के फील्ड अधिकारियों के साथ बातचीत करने के लिए आज यहां होने की खुशी है। जैसा कि आप जानते हैं, ने.यु.के.सं. और एनएसएस, सरकार के सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक हैं, एनएसएस के 33 लाख स्वयंसेवकों और ने.यु.के.सं युवा मंडल के 80 लाख सदस्यों के साथ पूरे देश में इनकी उपस्थिति है। ने.यु.के.सं और एनएसएस युवाओं में, जो हमारी जनसंख्या का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, व्यक्तित्व और नेतृत्व के गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

ने.यु.के.सं और एनएसएस दोनों युवाओं के बीच स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा की भावना को बढ़ावा दे रहे हैं। ने.यु.के.सं के युवा मंडल के सदस्य और एनएसएस के स्वयंसेवक साक्षरता और शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता और ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में विभिन्न विकास विभागों और स्थानीय निकायों के साथ काम करते हैं। ने.यु.के.सं और एनएसएस के स्वयंसेवक आपदा राहत और पुनर्वास के क्षेत्र में हमेशा सबसे आगे रहे हैं। हमारे स्वयंसेवकों ने हाल के चुनावों में मतदाता जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इस तरह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में योगदान दिया है। इन गतिविधियों से युवाओं को बेहतर व्यक्ति और बेहतर नागरिक बनने में मदद मिलेगी।

मुझे पता है कि ने.यु.के.सं और एनएसएस ने पहले भी कई महत्वपूर्ण पहलें की हैं। हालांकि, अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हमारे देश में 34 करोड़ से अधिक युवा है और इस संदर्भ में ने.यु.के.सं और एनएसएस के तहत शामिल युवाओं की संख्या अभी भी अपेक्षाकृत कम है। हमें ने.यु.के.सं और एनएसएस दोनों का विस्तार करने की जरूरत है। युवा मंडलों के माध्यम से देश के सभी गांवों में ने.यु.के.सं की उपस्थिति होनी चाहिए। मुझे पता है कि इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन उन्हें तेज करने की जरूरत है।

जैसा कि आप जानते हैं, सरकार युवाओं के नेतृत्व में विकास पर जोर दे रही है। इस संदर्भ में 'युवा नेता कार्यक्रम' नामक एक नया कार्यक्रम शुरू करने के लिए निर्णय लिया गया है। इस कार्यक्रम के तहत नेहरू युवा केन्द्र संगठन के युवा मण्डलों का प्लेटफार्म विकसित करने की योजना बनाई जा रही है । यह जीवंत 'प्रतिवेश संसद' के रूप में होगी जिससे युवाओं में नेतृत्व के गुणों का विकास हो सके और उन्हें राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ा जा सके । बड़े पैमाने पर अखिल भारतीय श्रमदान अभियान शुरू करने की योजना बनाई गई है। सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं द्वारा किये गए उत्कृष्ट कार्य को पहचानने और पुरस्कृत करने के लिए युवा नेताओं के लिए पुरस्कार की स्थापना करने तथा ऐसे प्रतिभाशाली युवाओं का दूसरों के लिए रोल मॉडल और परामर्शदाता के रूप में उपयोग करने की योजना बनाई है। कार्यक्रम के विवरण पर काम चल रहा है।

मैं आप सभी से इन दो जीवंत संगठनों ने.यु.के.सं और एनएसएस, को और बेहतर बनाने के लिए नए उत्साह के साथ काम करने का आग्रह करता हूँ। मैं जानता हूँ कि दोनों संगठन को स्टाफ और धन की कमी के विषय में कुछ मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है। मंत्रालय फिर से इन मुद्दों को हल करने के लिए सबसे अच्छा हरसंभव प्रयास करेगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि दोनों संगठन हाल ही में मंत्रालय द्वारा किए गए फैसले के अनुसार अपनी गतिविधियों के अभिसरण के साथ सही तालमेल से काम करेंगे।''

गरीबों का सशक्तिकरण

जुनून से हुसैन को मिली कामयाबी

श्री नासिर हुसैन एक बहुत सक्रिय और सक्षम युवक हैं। वे समुदाय के गरीब लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए एक जुनून के साथ बड़े हुए। अपने दिल की गहराई से वे वंचित समुदाय के सदस्यों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक आर्थिक समस्याओं की जरूरतों को पूरा करने के इच्छुक थे। इस जुनून से प्रेरित होकर वे, एक राष्ट्रीय सेवाकर्मी के रूप में पश्चिम बंगाल के बारासात में कार्यरत नेहरू युवा केंद्र से जुड़े। उन्होंने परिणाम उन्मुख विकास हस्तक्षेपों को प्रारंभ कर समुदाय के गरीब सदस्यों की सामाजिक आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाने की शपथ ली थी। सीखने की तमन्ना, विकास और प्रबंधन कौशल बढ़ाने की उनकी त्वरित क्षमता से उन्हें समुदायिक विकास के व्यावहारिक पहलुओं पर काम करने में मदद मिली । नेहरू युवा केंद्र के मार्गदर्शन में समुदाय को जोड़ने की उनकी निहित क्षमता स्पष्ट रूप से प्रकट हुई और वे समुदाय की विकास गतिविधियों के प्रबंधन में एक पेशेवर बन गये।

वर्ष 2006 में श्री हुसैन ने सामाजिक आर्थिक स्थिति के उत्थान और दलित लोगों को सशक्त करने के लिए जिले में, गोराईनगर, अग्निबीना संघ की स्थापना की। उनके सतत समर्पण और संगठन के प्रति प्रतिबद्धता ने गोराईनगर, अग्निबीना संघ को एक एकीकृत विकास एजेंसी बना दिया है। वे दृढ़ता, विवेकदृष्टि, सावधानीपूर्वक योजना बनाने, ईमानदारी से कार्यक्रम क्रियान्वयन और रणनीतियों के गुणों से लैस हैं जो उनके संगठन के विकास में महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। उन्होंने मूल्य आधारित समुदाय आधारित संगठन, और स्वयं सहायता समूह, किसान मंडल, संयुक्त देयता समूह, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र, रेडीमेड वस्त्र उत्पादन केंद्र, यूवा विकास कार्यक्रम, अग्निबीना बालवाड़ी अकादमी की स्थापना, सांप्रदायिक सद्भाव पर अभिविन्यास कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और लोक शिल्पकारों और दस्तकारों और वित्तीय समावेशन कार्यक्रम को बढ़ावा देने के मान्यता के रूप में जिला युवा पुरस्कार और राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित हुए।

गोराईनगर, अग्निबीना संघ ने सफलतापूर्वक स्वयं सहायता समूह के गठन के माध्यम से सशक्तिकरण की दिशा में असंख्य लाभार्थियों की प्रगति में मदद की जिनमें से 320 स्वयं सहायता समूह नाबार्ड और नेहरू युवा केंद्र, बारासात के वित्त सहयोग और मार्गदर्शन के तहत हैं। इन समूहों से संबंधित लगभग 3500 सदस्यों ने लगभग 90,00,000 रुपये के ऋण का लाभ उठाया और इसमें से लगभग 94 प्रतिशत चुका दिया गया है।

नाबार्ड की वित्तीय सहायता के तहत कार्यान्वित किसान मंडलों में लगभग 455 सदस्य हैं, जो बिचौलियों और साहूकारों को खत्म करने के क्रम में प्रौद्योगिकी और बैंक ऋण के उपयोग के साथ अपने कौशल को समृद्ध करने के लिए किसानों को सक्षम करने और उन्हें धीरे–धीरे सशक्त बना रहा है।

गोराईनगर, अग्निबीना संघ निम्नलिखित को प्राप्त करने में सक्षम हो गया है:

- प्रत्येक समूह में 5 सदस्यों वाले 81 संयुक्त देयता समूहों का गठन किया गया, जिसमें से प्रत्येक सदस्य ने कृषि, मछली पालन और छोटे व्यवसायों जैसी आय सृजन गतिविधियों को आरंभ करने के लिए बैंक से ऋण के रूप में 10,000 रुपये प्राप्त किए।

- व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा 21 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं, जिससे मोबाइल रिपेयरिंग, बिजली फिटिंग, पाइपलाइन, सिलाई और कृषि उपकरणों की मरम्मत में प्रशिक्षण के द्वारा लगभग 630 बेरोजगार युवा लाभान्वित हुए और उन्हें स्वरोजगार शुरू करने में मदद मिली।

- रेडीमेड वस्त्र उत्पादन केंद्र यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया द्वारा दी गई 8,94,200 रुपए की ऋण राशि के साथ चल रहा है, सिलाई यूनिट में 20 महिलाओं और पुरुषों को रोजगार मिला है।

- गोराईनगर, अग्निबीना संघ, कई युवा मंडलों के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रम आयोजित करता है और सामुदायिक विकास, जीवन और प्रबंधन और नेतृत्व कौशल में लगभग 30 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया।

- अग्निबीना बालवाड़ी अकादमी समुदाय के छोटे बच्चों के लिए एक पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम चलाती है। वंचित समुदाय के कई बच्चों को आनंद के साथ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ, जिन्हें 10 शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है।

- समुदाय आधारित शांति स्वयंसेवकों को परस्पर–धार्मिक संबंध, सांप्रदायिक सद्भाव, अध्यात्मवाद और मानवीय दृष्टिकोण पर संवेदित किया गया है।

- संगठन द्वारा लोक संस्कृति और लोक कारीगरों तथा दस्तकारों के संवर्धन का काम आरंभ किया गया है। लगभग 1526 कारीगरों ग्राहकों को प्रत्यक्ष बिक्री के लाभ और आर्थिक सशक्तिकरण तथा विशेषाधिकारों का आनंद ले रहे हैं।

- संगठन ने समुदाय के सदस्यों के द्वारा जूट, बैग, कपड़े, अचार और किसानों और समुदाय के युवाओं द्वारा निर्मित अन्य उत्पादों को बेचने के लिए लिए बहुउद्देशीय दुकानों की स्थापना की।

- नेहरू युवा केंद्र, बारासात से संबद्ध गोराईनगर, अग्निबीना संघ, पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के हारोआ ब्लॉक के दलित–शोषित लोगों के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए श्री नासिर हुसैन द्वारा आरंभ की गई भागीदारी और एकीकृत विकास पहल की सफलता को दर्शाता सुस्थापित संगठन है।

वाई.सी. परमेश की कहानी

सेवा के जज़्बे से बदल गई गाँव की तस्वीर

एक सरल साधारण बच्चे से एक नेता बनने की श्री वाई.सी. परमेश के जीवन की कहानी, जो अपने गांव को आगे ले जा रहा है और अपने गांव के युवाओं का एक आदर्श मार्गदर्शक बन गये हैं।

वाई.सी. परमेश

वाई सी परमेश का जन्म कर्नाटक में वाई यारहल्ली के मांड्या तालुका के, अनुसूचित जाति समुदाय के अनपढ़ माता पिता के घर 1977 में हुआ था। उसने पीयूसी तक शिक्षा प्राप्त की। एक बच्चे के रूप में वह बहुत सक्रिय था। उसे कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला था। उसमें कोई विशेष कौशल नहीं था। वह अपने गांव से किसी भी अन्य लड़कों की तरह सिर्फ एक साधारण सा लड़का था। लेकिन उसके पास एक सेवा करने वाला दिल और समुदाय के सदस्यों के जीवन में सुधार करने की इच्छा थी। उसे सामाजिक कार्यों में बहुत रुचि थी। वह सभी सामाजिक, सांस्कृतिक और सामुदायिक गतिविधियों में अपने समुदाय के सदस्यों की मदद करना चाहता था। उसकी दिली चाहत और समाज के विकास में उसकी गहरी रुचि से वह अपने गांव के सभी विकास गतिविधियों में शामिल हो गया। बढ़ते हुए, उसने जीवन के हर क्षेत्र में कठिनाइयों का अनुभव किया। उसके माता पिता अमीर न होने के कारण एक अच्छी शिक्षा पाने के लिए उसका सहयोग करने में सक्षम नहीं थे। वह अपने समुदाय से गरीब और तकलीफ समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा था। वह अपने लोगों की दुर्दशा से बहुत गहराई से प्रभावित था। उसने बिना किसी की मदद के केवल अपने बूते पर, अपनी मर्जी से, लोगों को सरकार और स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं और लाभ दिलाने के द्वारा अपने समुदाय के सदस्यों की मदद करनी शुरू कर दी। वह हमेशा सबसे आगे रहता था और सरकार द्वारा घोषित नई कल्याणकारी योजनाओं पता लगाता रहा।

युवा मंडल के सदस्य शौचालय पिटों में छल्ले लगाते दिखाई दे रहे हैं

वर्ष 2004 में वह एक राष्ट्रीय सेवा कर्मी के रूप में नेहरू युवा केंद्र संगठन में शामिल हो गया। नेहरू युवा केंद्र संगठन में उसने नेतृत्व प्रशिक्षण और समुदाय प्रबंधन प्राप्त किया और और अपने कौशल को विकसित करना और बढ़ाना सीखा। धीरे–धीरे वह एक सक्षम नेता में बदल गया। उन्होंने कहा कि गरीब समुदाय के व्यावहारिक पहलुओं पर ज्ञान प्राप्त किया। नेहरू युवा केंद्र संगठन में प्रशिक्षण के दो साल बाद, वह एक पूर्ण नेता के रूप में अपने गांव में सामुदायिक विकास को संभालने के लिए तैयार था। श्री वाई सी परमेश ने 40 सदस्यों से मिलकर नव कर्नाटक युवक संघ नामक एक युवा मंडल शुरू कर दिया। इस युवा वर्ग ने सराहनीय सामुदायिक विकास कार्य किया है। श्री वाई सी परमेश हमेशा एक प्रेरणा कारक रहे हैं और उनके युवा मंडल में और उसके आसपास के गांव में लगभग 2500 पौधे लगाने में मदद की, रक्तदान शिविरों का आयोजन किया, अपने गांव में 15 शौचालय का निर्माण किया, 15 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जिसने बचत और ऋण कार्यक्रमों के माध्यम से 5 लाख रुपये बचा लिये। युवा वर्ग ने सड़क और नालियों के निर्माण, मरम्मत और रखरखाव जैसी गतिविधियों को आरंभ किया और सार्वजनिक उपयोगिताओं के समुचित उपयोग पर जागरूकता उत्पन्न की।

श्री वाई सी परमेश, एक स्व–प्रेरित व्यक्ति हैं। वे एक प्रतिभाशाली लोक कलाकार हैं। वे सामाजिक मुद्दों, सामुदायिक विकास, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए युवाओं को प्रेरित करता है और उसकी मदद करते हैं। वे लोक कला और गीतों में गांव के युवाओं को प्रशिक्षित करते हैं। श्री परमेश बहुत प्रतिबद्ध है और एक अच्छा और मजबूत भविष्य बनाने में युवाओं की मदद करने के अपने मिशन के लिए समर्पित हैं। इस समय वे 20 सदस्यों की एक टीम के माध्यम से एक विपणन सर्वेक्षण का नेतृत्व कर रहे हैं, जिनमें से 15 उनके अपने युवा मंडल से हैं, जिसके द्वारा वे अन्य भत्ते के अलावा लगभग 8000 से 10,000 रुपये कमाने में सक्षम हैं।

नेहरू युवा केंद्र संगठन की गतिविधियों के तहत श्री वाई सी परमेश ने व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से व्यापक गतिविधियों, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों, साक्षरता और कानूनी जागरूकता, लिंग, स्थानीय प्रशासन, स्वरोजगार, आय सृजन और पर्यावरण संरक्षण पर प्रशिक्षण जैसी गतिविधियों को पूरा किया है।

उनकी पहल के माध्यम से पूरी की गई गतिविधियों में से कुछ निम्नलिखित हैं– माइक्रो फाइनेंस, एकीकृत महिला एवं बाल विकास, टिकाऊ कृषि, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जलाशय विकास, सामुदायिक स्वास्थ्य, संक्रामक रोगों की रोकथाम, सड़क सुरक्षा, लोगों, वित्तीय संस्थानों और सरकारी विभागों के बीच गठजोड़ आदि।

नेहरू युवा केंद्र संगठन और जिला युवा सेवा विभाग ने उन्हें वर्ष 2006–07 और 2008–09 के लिए 'जिले के उत्कृष्ट युवा' पुरस्कार से सम्मानित किया है। अपने सतत कार्य के लिए उसे और कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। उन्हें, विकासात्मक गतिविधियों पर बोलने, युवाओं को प्रोत्साहित और प्रेरित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता है। उनका युवा मंडल अन्य मंडलों के लिए एक आदर्श मंडल है।

श्री वाई सी परमेश ने, अपने गाँव के युवाओं प्रोत्साहित और प्रेरित करने के द्वारा उनके लिए काम करना जारी रखा है, वे गाँव में विकासात्मक गतिविधियों का आयोजन करते हैं और नेहरू युवा केंद्र संगठन के कार्यक्रमों में एक सक्रिय भागीदार हैं। वे अपने लोक नाटक और गीतों के माध्यम से विभिन्न मुद्दों के बारे में नाटक और नुक्कड़ नाटक और संदेशों के प्रसार से विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता भी उत्पन्न करते हैं। वे अपने गांव के सभी युवाओं के लिए एक आदर्श हैं।

अपनी प्रेरणा और नेतृत्व कौशल के माध्यम से उन्होंने निम्नलिखित हासिल किया है:

- रक्तदान शिविर, जहां उनके युवा मंडल के युवाओं ने रक्तदान किया।
- श्रमदान के माध्यम से, उसने अपने गांव में 15 शौचालयों का निर्माण किया है।
- अपने गांव में 2500 पौधे लगाए।
- ग्राम पंचायत से वित्तीय मदद के साथ, गांव में सड़क और सफाई को विकसित किया गया है और गांव का एक नक्शा तैयार किया गया है।
- नेहरू युवा केंद्र और 2006–07 और 2008–09 में जिला युवा सेवा विभाग ने उन्हें जिले के उत्कृष्ट युवा पुरस्कार से नवाजा।
- सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, प्रचार और स्वास्थ्य गतिविधियों की जाती हैं।

श्री वाई सी परमेश को समुदाय के विकास में अपने सराहनीय और आत्म प्रेरित कार्य के लिए कई विभागों द्वारा मान्यता दी गई है और सम्मानित किया गया है। वे युवाओं के लिए एक आदर्श हैं और युवाओं को सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेने और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करने में एक प्रेरक बल रहे हैं।

शेर दिल

17 साल की कुमारी दीपिका ने, न सिर्फ भालू के हमले से अपनी दादी को बचाया, बल्कि भालू को अपनी जान बचाने के लिए भागने पर भी मजबूर कर दिया।

उत्तराखंड के सिंदूरबनी, गउजर के निवासी श्री किशोर सिंह और श्रीमती मुन्नी देवी की पुत्री कुमारी दीपिका, बीएससी की छात्रा हैं। एक दिन जब वह उसकी दादी सुशीला देवी के साथ खेत में काम कर रही थी तभी एक भालू ने अचानक उसकी दादी पर हमला कर दिया। जब दीपिका ने इसे देखा, तो उसने अपने पास पड़ी एक दरांती उठा ली, और उस भालू के चेहरे पर मारना शुरू कर दिया। इस से नाराज, भालू ने उसकी दादी को छोड़ दिया और दीपिका की ओर बढ़ गया और उसके सिर पर हमला कर दिया लेकिन दीपिका एक बहादुर लड़की थी, उसने हार नहीं मानी। भालू के साथ हाथापाई में लगी चोट ने उसे रोका नहीं। वह और अधिक गुस्से में भरकर वापस आई और भालू के चेहरे पर हमले करना जारी रखा। जब भालू दीपिका की दरांती से और वार नहीं सह पाया तो वह उस जगह को छोड़ कर चला गया।

घटना से चिंतित होने के बाद दीपिका जल्दी घर जाना चाहती थी। खेत से बाहर आते समय वह फिसल गई और खेत में बनी एक खाई में गिर गई। बाद में उसने फोन पर इस घटना के बारे में लोगों को सूचित किया। गांव वाले खेत में आए और दीपिका और उसकी दादी दोनों को एक अस्पताल में ले गए।

वोट का अधिकार

जग गए युवा, रच दिया इतिहास

24 अप्रैल 2014, हैलीकांडी जिला, असमः सुबह के 06:00 बजे हैं और जिला हाई स्कूल में अभी से गतिविधियों की सरगर्मी है। पुरुषों, महिलाएं, बुजुर्ग और युवा वयस्कों अपने वोट डालने के लिए बाहर आ गए थे। वे इस दिन के लिए इंतजार कर रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार, मतदान प्रतिशत में लगभग 8 प्रतिशत की सामान्य वृद्धि हुई है और महिला मतदाताओं की संख्या में 20 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई है।

26 अप्रैल 2014, चंबा जिला, हिमाचल प्रदेशः पूरे माहौल में चारों ओर से आने वाली आवाजों के कोलाहल की प्रतिध्वनि है। 'लोकतंत्र हम से, वोट करें गर्व से' (क्योंकि लोकतंत्र हम में से है। हम गर्व से अपने वोट डालेंगे)

भारत भर में 14 राज्यों के 252 जिलों के 39,000 से अधिक गांवों में इसी तरह के परिदृश्यों को दोहराया गया है। भारत निर्वाचन आयोग के नेतृत्व में तैयार और अन्य बातों के साथ नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा कार्यान्वित अपनी तरह के इस मतदाता जागरूकता अभियान ने देश के हर कोने में 14 लाख से अधिक लोगों को अपने वोट देने के अधिकार का प्रयोग करने के बारे में अवगत कराया।

नेहरू युवा केंद्र संगठन पूरे भारत में फैले अपने जिला ने.यु.के.सं. के माध्यम से ईसीआई के एसवीईईपी कार्यक्रम के साथ सक्रिय रूप से जुड़े और 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान व्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता (एसवीईईपी) के लिए सहायता प्रदान की।

2014 के लोकसभा चुनाव में (टाइम्स ऑफ इंडिया रिपोर्ट, 2014 के अनुसार) मतदाताओं द्वारा अभूतपूर्व मतदान देखा हमारे देश के इतिहास में (66.4%) इसे उच्चतम मतदान के रूप में दर्ज किया गया। भारत का जनसांख्यिकीय गतिशीलता ऐसी है कि वोट करने के अपने अधिकार का प्रयोग करने के लिए मानवों का एक विशाल समूह जुटाने का मतलब एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है! हालांकि, भारत के चुनाव आयोग और ने.यु.के.सं. की साझेदारी ने चुनाव के पहले चुनाव के लिए एक अनुकूल माहौल बनाने की सही प्रेरणा दी। इसने लोगों को लोकतंत्र में अपनी भूमिका पर सोचने, प्रश्न करने और चर्चा करने के लिए बाध्य किया और और जैसा भविष्य वे चाहते हैं कि उसके लिए अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए सशक्त किया।

जिला प्रशासन व ग्राम स्तरीय युवा मंडलों के सहयोग से नेहरू युवा केंद्र, हैलीकांदी ने हैलीकांदी जिला में बहुत उचित तरीके से एक महीना लंबे मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया।

ने.यु.के.सं. के सभी क्षेत्रीय निदेशक, उप

मुख्य विशेषताएं

- **ने.यु.के.सं. ने, 14 राज्यों के 252 जिलों में 39,133 गांवों में एसवीईईपी अभियान लागू किया है। अभियान में 87, 47299 पुरुष तथा 5,26,488 महिलाओं सहित 1400787 लोगों को शामिल किया गया।**
- **हिमाचल प्रदेश में 3199 गांवों में 28,000 से अधिक लोगों तक पहुँचने के लिए एसवीईईपी अभियान शुरू किया गया।**
- **ने.यु.के. बहराइच में 225 युवा मंडलों, 74 महिला मंडलों ने एसवीईईपी अभियान में भाग लिया। 2400 से अधिक पुरुषों और 600 महिलाओं ने इनमें भाग लिया।**
- **धुबरी जिले के मतदान प्रतिशत 2011 में 81. 60% और 2009 में 75.57% की तुलना में 87.10% के रूप में दर्ज किया गया, गौरीपुर और गोलकगंज जिले में, पिछले लोकसभा चुनाव की तुलना में मतदान प्रतिशत में 2% की वृद्धि दर्ज की गई।**
- **असम के हैलीकांदी जिले के सामान्य मतदान प्रतिशत में 8% की और महिला मतदाताओं में लगभग 20% की वृद्धि हुई।**
- **राष्ट्रीय युवा कोर के स्वयंसेवकों एवं युवा नेताओं के माध्यम से नेहरू युवा केंद्र, कठुआ ने 187 गांवों में सफलतापूर्वक मतदाता जागरूकता अभियान की गतिविधियों का शुभारंभ किया और विवेकपूर्ण तरीके से अपने वोट डालना होगा कि घोषणा पर 5885 व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराए गए।**

निदेशक और जिला युवा समन्वयक राज्यों और जिलों में निर्वाचन अधिकारी के साथ दिन–रात मेहनत की और व्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता कार्यक्रम शुरू किया और इसे एक सफल पहचान बनाया।

नेहरू युवा केंद्र, लेह भी एसवीईईपी कार्यक्रम में एक प्रमुख भागीदार बन गया जहां जिला कलेक्टर ने जिले के विभिन्न भागों में इस अभियान का हिस्सा बनने के लिए समय निकाला। नुब्रा, चोचोट में और लेह शहर में ''एक मजबूत लोकतंत्र के लिए अधिक से अधिक भागीदारी''– प्रचार अभियान से अभियान के लिए अभूतपूर्व समर्थन मिला। निर्वाचन आयोग द्वारा श्रीमती. तजामुल आरा, जिला युवा समन्वयक, लेह को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए एक प्रशस्ति पत्र दिया गया।

एसवीईईपी के बैनर तले मतदान को बढ़ावा देने के लिए, आउटरीच के मैराथन, रैलियों, जुलूस, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, फिल्म प्रदर्शन, नुक्कड़ नाटक, एसएमएस और हेल्प लाइनों जैसे कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। ने.यु.के.सं. देश भर में युवा मंडल के व्यापक नेटवर्क के साथ 18–25 वर्ष के आयु वर्ग के नए मतदाताओं का दोहन करने में विशेष रूप से लगा हुआ था। चुनावी प्रक्रिया के बारे में युवाओं और छात्रों के बीच अधिक से अधिक जागरूकता को बढ़ावा देने और मतदाता पंजीकरण की सुविधा में उनकी सहायता लेने के उद्देश्य से, चुनावी प्रक्रिया के बारे में लोगों की जागरूकता बढ़ाने के लिए ने.यु.के.सं. ने स्वास्थ्य, शिक्षा, सहकारी समितियों, कल्याण विभाग जैसे केंद्रीय और राज्य सरकार के विभागों के साथ ही नागरिक समाज और गैर–सरकारी संगठनों के साथ सहयोग किया।

कई जिलों में, एनएसएस सेल और नेहरू युवा केंद्र ने एनएसएस छात्रों, नेहरू युवा केंद्र युवा नेताओं और कार्यक्रम अधिकारियों के साथ बातचीत करने के लिए मेगा बातचीत कार्यक्रमों का आयोजन किया। नाम पंजीकरण, पहचान प्रमाण, मतदान केंद्र स्थान, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का उपयोग, आचरण आदि के मॉडल कोड से संबंधित मतदाताओं के ज्ञान में मौजूदा अंतराल में भरने के उद्देश्य से अभिविन्यास कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। नेहरू युवा केंद्र, इम्फाल और एनएसएस सेल, मणिपुर विश्वविद्यालय, श्री ओ. नवकिशोर सिंह, आईएएस, मुख्य निर्वाचन अधिकारी, मणिपुर और प्रो एचएनके शर्मा, कुलपति, मणिपुर विश्वविद्यालय क्रमशः मुख्य अतिथि और अध्यक्ष के रूप में के साथ 26 मार्च 2014 को मणिपुर विश्वविद्यालय के शताब्दी हॉल में एक दिन का मेगा सहभागिता कार्यक्रम आयोजित किया।

बातचीत कार्यक्रम के दौरान मुख्य निर्वाचन अधिकारी मणिपुर ने कहा कि एक मतदाता लोकतांत्रिक चुनाव में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। चुनावी प्रक्रिया में मतदाता की भागीदारी **''किसी भी लोकतंत्र के सफल संचालन का एक अभिन्न हिस्सा है।''**

एसवीईईपी अभियान का व्यापक ध्यान इस **'युवा चलो बूथ'** और **'लोकतंत्र की रक्षा के लिये युवा जुड़ो मतदान से' (लोकतंत्र, युवा सहयोगी और वोट के संरक्षण के लिए)** जैसे विषयों के साथ युवाओं की भागीदारी पर दिया गया है।

श्री शमशीर सिंह, उप. आयुक्त, हैलीकांदी ने नेहरू युवा केंद्र, हैलीकांदी द्वारा आयोजित मोटर साइकिल रैली को रवाना किया।

हम, भारत के लोकतंत्र में आस्था रखने वाले नागरिक, एतद् द्वारा, अपने देश की लोकतांत्रिक परंपराओं और स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव की गरिमा बनाए रखने और निडर होकर हर चुनाव में मूलवंश, जाति, समुदाय, भाषा या धर्म के विचारों से प्रभावित हुए बिना और बिना किसी प्रलोभन के मतदान करने की शपथ लेते हैं।

(शपथ एसवीईईपी अभियान के लिए ईसीआई द्वारा विकसित)

वेलु मुरुगन की प्रेरणा

नौजवानों के हाथों से निखर गई झील

श्री वेलू मुरुगन एक ऐसे परिवार से हैं जिसका पेशा शिक्षा के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उनके माता पिता दोनों ही शिक्षक हैं। उनकी 3 बहनें और उनके पति व्याख्याता और प्रोफेसर हैं। उनके भाई ने एमएस, एमफिल, पीएचडी पूरी की और एक कॉलेज में एक प्रोफेसर है। श्री वेलु ने भी मानव विकास गतिविधियों को अपनाने से पहले एक व्याख्याता के रूप में काम किया है। एक व्याख्याता के रूप में काम करने के लगभग एक वर्ष के बाद श्री वेलू ने सामुदायिक विकास का हिस्सा बनने की अपनी इच्छा को पूरा करना तय किया।

उनकी रुचि उन्हें नेहरू युवा केंद्र संगठन (ने.यु.के.सं.) ले गई जहां उन्होंने समुदाय के प्रबंधन और नेतृत्व विकास में प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के बाद, उन्होंने अपने गांव में कई युवा मंडल शुरू किए। श्री वेलू युवाओं को एक मकसद के लिए काम करने और खुद के लिए एक जगह बनाने के लिए प्रशिक्षित, प्रेरित और निर्देशित करते हैं और उन्होंने सामुदायिक सेवा के महत्व को समझना शुरू किया।

गाँधीग्राम विश्वविद्यालय से ग्रामीण औद्योगिक विकास कार्यक्रम में एक डिग्री से लैस, श्री वेलू ने ग्राम पंचायत से संपर्क किया और सरकार के वृद्धावस्था पेंशन, स्वास्थ्य कार्ड, किसान ऋण, आवास और स्वच्छता, सड़क निर्माण जैसी सरकारी योजनाओं से ग्रामीण समुदाय को लाभ पहुँचाने में मदद मिली।

ने.यु.के.सं. में 22 साल की अपनी सेवा के दौरान उन्होंने 18,000 सदस्यों से मिलकर 631 युवा मंडलों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे ने.यु.के.सं. की आगे की कार्रवाई की योजना बनाने में मार्गदर्शक रहे हैं।

श्री वेलू युवाओं को लगता है कि युवावस्था व्यक्ति के जीवन में एक स्वर्ण युग जैसी है। यही उम्र है जब वे जानने और एक बेहतर समाज के लिए काम करने के लिए तैयार रहते हैं। जब वे ऊर्जावान और उत्साह से भरे हुए होते हैं। समुदाय की सेवा के प्रति उनकी गहरी रुचि होती है। श्री वेलू युवाओं के साथ काम करते हुए बहुत खुश है और वे उनके साथ अच्छी तरह मिल जाते हैं। वे जानते हैं कि युवावस्था किसी के कैरियर को तैयार और विकसित करने, समुदाय के लिए उसकी सेवाओं का उपयोग करने और उसे देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए सही उम्र है। चूंकि वे 100% प्रतिबद्धता और समर्पण देने में सक्षम हैं, जिसके माध्यम से उन्हें सही रास्ते पर डाला जा सकता है।

ने.यु.के.सं. के लिए उनकी सेवा में श्री वेलू ने समुदाय की सराहनीय सेवा की है। 1999 में उनकी बड़ी परियोजनाओं में से एक के दौरान वे जलकुंभी और खर–पतवार से ढकी ऊटी में एक 42 एकड़ की झील को साफ करने के लिए अपने युवाओं का समर्थन पाने में सक्षम रहे थे। पूरी झील को साफ करने में उन्हें साढ़े तीन महीने लगे थे। इस परियोजना को सरकार से अनुमोदन मिला था क्योंकि वह झील को साफ करने के लिए एक समाधान खोजने में असमर्थ थी। श्री वेलू ने व्यक्तिगत रूप से झील का सौंदर्यीकरण सुनिश्चित करने के लिए इस काम को प्रारंभ किया था और इस काम में 3500 युवाओं की सेवा का उपयोग किया गया था। वर्ष 2000 में एक और बड़ी परियोजना में, श्री वेलू ने नीलगिरी के एक पर्यटक स्थल से प्लास्टिक कचरे को साफ करने का काम हाथ में लिया। अपने एक क्षेत्र भ्रमण के दौरान, जब वे कलेक्टर श्री शिवशंकर के साथ यात्रा कर रहे थे, श्री वेलू ने सड़क पर एक मृत हाथी देखा। शव परीक्षण के बाद यह पता चला था कि उसके पेट में 3 किलोग्राम प्लास्टिक कागज का कचरा पाया गया था और उसकी मौत का यही कारण था। कलेक्टर ने श्री वेलू से स्थिति के बारे में कुछ करने के लिए अनुरोध किया। श्री वेलू ने पूरी जगह को कचरे से साफ करने के विशाल कार्य की जिम्मेदारी स्वीकार की। उन्होंने इस कार्य के लिए नीलगिरी के पूरे जिले से 1500 युवा स्वयंसेवकों को एकत्र किया। उन्होंने बहुत मेहनत की और जगह को प्लास्टिक कचरे से मुक्त कर दिया। उन्होंने 3500 किलोग्राम प्लास्टिक का कचरा इकठ्ठा किया और एकत्र कूड़े के खतरों और इससे पर्यावरण को होने वाली क्षति के बारे में जागरूकता अभियान का आयोजन किया। उन्होंने 43,500 पौधे भी लगाए। कलेक्टर ने देख कि उस जगह की सुंदरता को फिर से बहाल किया गया है और ऊटी को पर्यावरण के अनुकूल तथा प्लास्टिक के कचरे से मुक्त स्थान घोषित किया।

जनवरी, 2014 में, श्री वेलू सरकार द्वारा छोड़ दी गई, एक परियोजना हाथ में लिया। उन्होंने सरकार की मदद से गरीब लोगों के लिए व्यक्तिगत आवास उपलब्ध कराने के लिए निर्मल भारत अभियान नामक परियोजना की प्रक्रिया शुरू की। ने.यु.के.सं. ने 5475 परिवारों के नाम दिए। उन्होंने मकान और शौचालयों के निर्माण के लिए एक 4 चरण की योजना की प्रक्रिया बनाई। उन्होंने शौचालय के लिए 1000 गड्ढों की खुदाई के साथ काम शुरू किया और अब तक लगभग 250 शौचालय बनाने का काम पूरा किया गया है। पूरा काम ने.यु.के.सं. युवा मंडलों के युवाओं द्वारा किया जा रहा है। उनका लक्ष्य 10,000 शौचालयों के निर्माण का है।

श्री वेलू उस काम को संभालना पसंद करते हैं जिसमें कोई कठिनाई आती है। वे इसे एक चुनौती के रूप में लेते हैं। वे बहुत मेहनती और गरीबों के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने अपने गांव में कई परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है और हजारों युवाओं के करियर का निर्माण किया है। वह युवाओं के लिए एक प्रेरक कारक और एक आदर्श हैं। उन्होंने कई विभागों और जनता से काफी सम्मान और सराहना प्राप्त की है।

विश्वास की पटरी पर लौट आया गाँव

आसपास के क्षेत्र से धर्मावलंबी के समूह गहरी श्रद्धा के साथ राजस्थान में सीकर जिले के मुंदरु गांव में मंदिर और दरगाह की यात्रा करते हैं। उत्कर्ष के इस बिंदु ने लंबे समय से सद्भाव और भाईचारे को बढ़ावा दिया है। लेकिन बाकी सब की तरह इसे भी बदलाव और परिवर्तन के माध्यम का सामना करना पड़ा है, आपसी समझौते और शांति की इस भावना को भी एक घायल स्थिति से से गुजरना पड़ा। समुदायों ने एक दूसरे में विश्वास और सद्भावना खो दी। बाबरी मस्जिद के विध्वंस का असर इस गांव पर भी पड़ा। लोग संभावित नतीजे पर चिंतित और दुखी थे। पूरा गांव एक डर में जी रहा था।

ठीक तभी, केवल कक्षा 9 तक शिक्षा प्राप्त करने वाले एक नायक, रमेश कलवतिया, ने अपने ही तरह के विचार रखने वाले हिम्मत सिंह शेखावत, अकबर खान, लियाकत खान, शमशेर खान जैसे अन्य लोगों के साथ, गांव के सद्भाव और डर को दूर करने का काम खुद पर ले लिया। रमेश और उसके दोस्तों को सौहार्दपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने और दोनों समुदायों के बीच आई दूरी को पाटने की दिशा में काम करने के लिए साथ मिलकर एक युवा मंडल का गठन करने की जिम्मेदारी ली। कई चरणों के बीच सबसे महत्वपूर्ण काम था गांव में अफवाहें को फैलने से रोकना और जो लोग अशांति पैदा करने के लिए धर्म का उपयोग कर रहे थे उन्हें उजागर करने का फैसला किया गया।

युवा मंडल के सभी सदस्यों ने सभी हिन्दू और मुस्लिम त्यौहारों को साथ मिलकर मनाने का फैसला किया। संगठन ने ईद, रमजान, और पैगम्बर के जन्म दिन के साथ नृसिंह जयंती, राम जयंती, हनुमान जयंती मनाई। इन पहलों और आयोजनों ने उन्हें युवा मंडलों के जीवन का एक अभिन्न अंग बना दिया है। वे बाहर की ऐसी किसी भी अप्रिय घटना के प्रति हमेशा सतर्क और तैयार थे जो गांव की एकता और सद्भाव बिगाड़ सकती थी। पिछले 15–16 सालों से युवा मंच ने सामुदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने की दिशा में लगातार कार्य किया है। युवा मंडल ने साथ बैठकर और बातचीत के द्वारा स्थानीय स्तर पर 20 विवादों को भी हल किया है।

युवा मंडल के अध्यक्ष, रमेश कलवतिया का मानना है कि यह एक सतत प्रक्रिया है कि और गांव में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए उन्हें इस दिशा में काम करते रहने की जरूरत है। युवा मंडल के पास केवल सांप्रदायिक अशांति को दूर रखने का ही कार्य नहीं था, वे पेयजल, वृक्षारोपण, टीकाकरण और भी बहुत कुछ उपलब्ध कराने में भी शामिल थे।

युवा मंडल को धन्यवाद, आज मुंदरु गांव शांति और समझदारी से जीवन बीता रहा है, गांव में विकास और सद्भाव लाया गया है।

रघुवीर सिंह की पहल

गाँव में बह रही है विकास की धारा

वर्ष 2006–2013 में गठित माँ गायत्री ग्राम विकास एवं शिक्षा समिति नामक युवा मंडल ने और विशेष रूप से इसके अध्यक्ष रघुवीर सिंह पंवार की अदम्य रुचि, समर्पण और लगन ने दर्शाया है कि कुछ भी असंभव नहीं है।

मध्य प्रदेश में जिला उज्जैन के एक गांव, उज्जइनिया गांव के लिए वही पुरानी कहानी थी, वही माहौल, वही मुद्दे, और निपटने के लिए वही समस्या। लेकिन नेहरू युवा केंद्र के कदम रखने से चीजों में बदलाव आया और परिवर्तन की एक लहर ने स्थान लिया।

श्री रघुवीर सिंह ने अपने गांव का चेहरा बदलने के लिए अपने प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ी और अपनी शारीरिक असक्षमता को उन्होंने अपने मिशन में आड़े नहीं आने दिया । उनका संकल्प और दृढ़ निश्चय उनकी शारीरिक विकलांगता की तुलना में कहीं अधिक बड़ा था जहां चाह होती है, वहां हमेशा कोई न कोई तरीका भी होता है।

गांव के युवाओं ने एक साथ मिलकर और रघुवीर सिंह के कुशल मार्गदर्शन के तहत वर्ष 2006 में गांव के परिवर्तन के लिए युवाओं को लामबंद करने के लिए एक छोटा सा कदम उठाया। इस तरह सिर्फ पूरे गांव की मानसिकता ही नहीं बदली बल्कि एक नई लहर शुरू हो गई।

सबसे पहले, गांव की ताकत, समस्याओं और कठिनाइयों को सूचीबद्ध किया गया। महत्वपूर्ण मुद्दों और क्षेत्रों के इस मानचित्रण के बाद, मुद्दों की गंभीरता के अनुसार प्राथमिकता निश्चित की गई। जिन मुद्दों को केवल सामूहिक प्रयासों के माध्यम से हल किया जा सकता है ऐसे मुद्दों का उल्लेख किया गया और जिनके लिए प्रशासनिक या प्रतिनिधि समर्थन की जरूरत थी उनका अलग से उल्लेख किया गया था।

युवा मंडल द्वारा चुने गए और करने में सक्षम के रूप में बताए गए मुद्दे हैं:

चलो यहां शिक्षा का प्रकाश लाएं

300 छात्रों वाले उजइनिया के स्कूल में बहुत कम उपस्थिति देखी गई और आधारभूत संरचना का भी अभाव है। जो लोग अपने बच्चों को आगे की शिक्षा के लिए पड़ोसी शहरों में भेज सकते थे उन्होंने ऐसा किया लेकिन गरीब आबादी के जो लोग ऐसा नहीं कर सकते थे उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजा। युवा मंडल के सदस्यों को अपने दरवाजे –दरवाजे जाकर अपने अभियान के माध्यम से माता–पिताओं को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया और स्कूल में दाखिले के लिए फार्म भरने में उनकी मदद की। इस समुदायिक पहल से 500 से अधिक छात्र लाभान्वित हुए।

युवा मंडल के प्रयास बेहद उपयोगी रहे हैं और स्कूल में अब काफी छात्रों का नामांकन हुआ है और कम बच्चों ने स्कूल छोड़ा है।

लोगों के कल्याण कार्यक्रमों में भागीदारी

प्रशासन द्वारा आयोजित और कार्यान्वित कल्याण कार्यक्रमों में युवा मंडल ने पूरे दिल से भाग लिया। युवा मंडल इसके कार्यान्वयन में मदद करता है और ऐसा करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। जो लोग वास्तव में जरूरतमंद हैं और जिन्हें मदद की आवश्यकता होती है इस प्रकार उन तक पहुँचा जा रहा है और योजना से उन्हें लाभ हो रहा है। युवा मंडल गांव में योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता पैदा करता है और आवेदन पत्र दाखिल करने और अन्य औपचारिकताओं को पूरा करने से मदद करता है। इससे न केवल समय बचता है, बल्कि लाभार्थियों तक पहुंचने में भी मदद करता है जो अन्यथा उनके लिए बनी योजनाओं से लाभान्वित नहीं हो सकते थे। इस प्रकार ग्रामीणों को देरी और सरकारी कागजात पर काम करने में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता क्योंकि युवा मंडल से उन्हें मदद मिलती है।

कुछ योजनाएं जिनमें युवा मंडल मदद कर रहे हैं, वे हैं पेंशन योजनाएं/निराश्रित पेंशन/गरीबी रेखा कार्ड/राशन कार्ड/आधार कार्ड, पैन कार्ड, बिजली बिल, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र, बीमा आदि।

स्वास्थ्य सेवाएं

युवा मंडल स्वास्थ्य जांच शिविरों के आयोजन में मदद करता है और इन शिविरों के माध्यम से स्वास्थ्य कल्याण योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को जागरुक बनाया जाता है और उन्हें विशेष रूप से उनके लिए बनाई गई योजनाओं और स्कामों से लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

रक्त जांच शिविरों का आयोजन किया जाता है जो युवाओं को रक्त दान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। युवा मंडल द्वारा गांव में आपातकालीन आवश्यकता के लिए उनके रक्त समूह की जानकारी के साथ स्वैच्छिक रक्त दाताओं की एक सूची रखी गई है। उनके इस प्रयास ने इस नेक कदम उठाने और स्वेच्छा से रक्त दान करने के लिए दूसरों का भी हौसला बढ़ाया है।

तटबंध

जल संरक्षण की जिम्मेदारी लेकर, युवा मंडल ने स्वैच्छिक श्रमदान के माध्यम से गांव के तालाबों और नालों पर तटबंधों को मजबूत किया है। इससे भूजल के पुनर्भरण में मदद मिली है और मवेशियों को इन संरक्षित तालाबों से पानी पीने में मदद मिली है।

कृषि का उन्नयन

उज्जैन मुख्य रूप से एक कृषि जिला है। किसानों को कीटनाशक, उर्वरक, बीज और अन्य कृषि सामग्री की खोज में दूर तक जाना पड़ता है। कई बार, इनकी अनुपलब्धता की वजह से उन्हें काफी नुकसान भी होता है।

इस समस्या को दूर करने के लिए, युवा मंडल ने एक किसान मंडल का गठन किया है। कृषि विशेषज्ञों और कृषि विस्तार अधिकारियों की मदद से, किसानों को तकनीकी रूप से बेहतर तरीके और खेती के साधन दिए गए। जैविक खेती, वर्मीकम्पोस्ट खाद के साथ ही जैविक कीटनाशकों के महत्व पर जानकारी दी गई और किसानों को स्थानीय स्तर पर उनका निर्माण करने के लिए प्रशिक्षित भी किया गया.

कम्प्यूटर प्रशिक्षण

आज का समय और युग में कम्प्यूटर प्रशिक्षण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हालांकि शहरों और कस्बों में यह आसानी से उपलब्ध है, पर ग्रामीण क्षेत्रों में कंप्यूटर का उपयोग करना काफी मुश्किल है।

युवा मंडल इसे न सिर्फ सुलभ बना दिया है,बल्कि बहुत कम लागत पर ऐसा किया गया है। प्रशिक्षण केंद्र महर्षि महेश योगी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसमें 250 छात्र हैं।

बैंकिंग की सुविधा

भारतीय स्टेट बैंक के काउंटर को गांव के लिए अधिकृत किया गया है। युवा मंडल ने इसमें मदद की है।

बचत खाता खोलना, गैस सिलेंडर पर मनरेगा छूट, मातृत्व सुरक्षा राशि, वृद्धावस्था पेंशन, और सब्सिडी खाते, छात्रवृत्ति आदि सभी को अब काउंटर के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है।

यह सभी गांव वालों के लिए एक अविश्वसनीय सुविधा है। लगभग 2000 खाते कार्यात्मक हैं और 70 लाख रुपये के आसपास लेनदेन किया गया है। इस गांव के लिए यह एक अविश्वसनीय उपलब्धि है।

सलाहकार (मेंटर) युवा मंडल

ने.यु.के. ने अब सलाहकार युवा मंडल के रूप में नामित किया है, जो न केवल अपने गांव, बल्कि आसपास के लगभग 10 गांवों की जरूरतों को पूरा करता है। यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचने के विचार के साथ किया गया है जो इसके प्रयासों से एक उदाहरण ले सकते हैं और अपनी गतिविधियों में उनकी नकल कर सकते हैं।

युवा मंडल ने वर्ष 2012–2013 के लिए जिला स्तर पर श्रेष्ठ युवा मंडल का पुरस्कार प्राप्त किया है।

श्री पंवार के प्रयासों में सुनील कुमार भट्ट, बटुशंकर शर्मा, लोकेंद्र सिंह पंवार, महेंद्र कुमार श्रीवास्तव, गोपाल मालवीय और बहुत से अन्य सदस्यों की भागीदारी रहती है जिन्होंने उजइनिया और अपने लोगों के लिए एक खास पहचान बनाने के लिए लगातार काम किया है। श्री अरविंद श्रीधर, जिला युवा समन्वयक, उज्जैन ने इस युवा मंडल को प्रेरित करने और मार्गदर्शन में अपने प्रयास किए हैं और महसूस करते हैं समुदाय द्वारा स्थानीय पहल निश्चित रूप से हमेशा परिवर्तन ला सकती है ।

उजइनिया वास्तव में सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं और युवा मंडलों के लिए एक प्रेरणा है

▲ रघुवीर सिंह पंवार

आकाश ही सीमा है

मिजोरम की युवती के. सी. लालुनपुई ने दर्शाया, कैसे!

एक युवा उत्साही लड़की, के. सी. लालुनपुई ने अपने समर्पण और कड़ी मेहनत से कई दिलों को जीत लिया है। वह एक स्नातक और कंप्यूटर में माहिर है। अपने भविष्य के लिए उसके पास बड़े सपने है और वह अपने काम को बहुत गंभीरता से लेती है, जो उसकी उम्र के लिए एक दुर्लभ गुण है। एक एन.वाई.सी. स्वयंसेवी के रूप में यह उसका पहला साल है, लेकिन उसकी पूरी तरह से व्यावसायिकता ने उसे लाइ युवा एसोसिएशन बाजे वेंग, लानगटलाई, वह युवा मंडल जिसके लिए वह काम कर रही है, के मुख्य कार्यों से निपटने में उसे पारंगत बना दिया है।

के. सी.लालुनपुई कहती है **''मैं अपने काम को एक चुनौती के रूप में लेती हूँ और मैं सामान्यता के साथ संतुष्ट नहीं होती। मैं अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ करना चाहती हूँ और अपने संगठन को आसमान तक पहुँचाना चाहती हूँ। ने.यु.के.सं. की मदद से, हम अपने समुदाय के उत्थान के लिए महान काम कर रहे हैं और भविष्य में ऐसा करना जारी रखेंगे।''**

यह उसकी निरंतर दृढ़ता की वजह से संभव हुआ कि उसके संगठन को सर्वोत्तम युवा मंडल अवार्ड मिला है और यहां तक कि राष्ट्रीय स्तर पर सिफारिश भी की गई है।

घटना को याद करते हुए, उसने कहा, **''जब युवा मंडल के मुख्य एजेंडा पर चर्चा करने के लिए उपायुक्त द्वारा बुलाई गई बैठक को, जो 'सर्वश्रेष्ठ युवा मंडल अवार्ड' के चयन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, इसकी समिति के सदस्यों में से कुछ की पूर्व प्रतिबद्धताओं के कारण रोक दिया गया तो मैं बहुत निराश थी। हम राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करने के अपने सुनहरे अवसर को खोना नहीं चाहते थे। मैंने इस इनकार के साथ रहने से मना कर दिया और मैं पु. आर, लालसंग्लुआइया, एमसीएस अतिरिक्त उपायुक्त की मदद से वह सब किया जो मैं बैठक के पुर्नआयोजन के लिए कर सकती थी। और इस प्रकार, बैठक फिर से आयोजित की गई और सदस्यों ने सर्वसम्मति से हमारे मंडल को सर्वश्रेष्ठ युवा मंडल के रूप में सम्मानित किया और हमें दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया गया था। उन्होंने मंडल पर राष्ट्रीय स्तर पर विचार किए जाने के लिए एक सिफारिशी पत्र भी लिखा था।''**

यह पूरे देश की लंबाई और चौड़ाई के हर कोने में देखी जाने वाली जीत की कई कहानियों में से एक कहानी है। देश भर में युवाओं के व्यापक नेटवर्क के साथ ने.यु.के.सं. युवाओं को उनकी असली क्षमता का एहसास करने के लिए एक मंच प्रदान करने का सबसे अच्छा प्रयास कर रहा है। के. सी.लालुनपुई जैसे युवा अपने समर्पण और कड़ी मेहनत के साथ एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं कि आकाश की सीमा है। वे अपनी प्रगति में चुनौतियों स्वीकार करते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सीढ़ी के एक पत्थर के रूप में इसका इस्तेमाल करते हैं। ने.यु. के.सं. इस ऊर्जा में ईंधन भरने का काम करता रहेगा जिससे युवाओं को फायदा होने के साथ–साथ राष्ट्र की भी प्रगति होगी।

के. सी. लालुनपुई ▶

युवाओं का दायित्व

लाल बहादुर शास्त्री

भविष्य के लिए आपका लक्ष्य जो भी हो, लेकिन आप में से प्रत्येक को सबसे पहले स्वयं को इस देश के नागरिक के रूप में देखना चाहिए । वह देश आपको कुछ अधिकार देता है, जो संविधान द्वारा सुनिश्चित है, लेकिन इनके साथ ही आपके कुछ दायित्व भी जुड़े हुए हैं जिन्हें अच्छी तरह से समझा जाना चाहिए। हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है जो अपने प्रत्येक नागरिक को आजादी का हक देता है, लेकिन एक संगठित और सुव्यवस्थित समाज के हक में आजादी पर कुछ स्वैच्छिक बन्दिशें भी लागू होती हैं और वो स्वैच्छिक पाबन्दियाँ दिन प्रतिदिन के व्यवहार में प्रदर्शित होनी चाहिए ।

एक अच्छा नागरिक वह है जो कानून का पालन करता है, भले ही आस-पास कोई पुलिस वाला हो या ना हो और इसके साथ ही जिसे अपने नागरिक कर्तव्यों को निभाने में खुशी मिलती है । पुराने जमाने में परिवार और अध्यापकों के सम्मिलित प्रयास से आत्मनियन्त्रण और अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता था लेकिन दुर्भाग्य से आज की जिन्दगी में रोजगार के दबाब के चलते माँ-बाप के पास इतना वक्त ही नहीं रहता कि वे अपने बच्चों को समय दे सकें । शैक्षणिक संस्थाओं में पढ़ने वालों की तादाद इतनी ज्यादा हो चुकी है कि पहले जहाँ अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच जो व्यक्तिगत और सीधा सम्बन्ध हुआ करता था वह आज सम्भव नहीं । हमारे युवा विद्यार्थी आज खुद अपने संसाधनों के ऊपर निर्भर करते हैं । अक्सर इससे समस्याएं भी पैदा होती हैं । जिसके बारे में हम सब जानते हैं । यह एक ऐसी सच्चाई है जिसके बारे में गंभीरता से विचार करना जरूरी है। आज के नौजवानों की जिम्मेदारियाँ बहुत बड़ी हैं। मेरी दृष्टि में जीवन का प्रत्येक चरण अपने आप में महत्वपूर्ण है । श्रम की अपनी गरिमा है और अपने कार्य को अपनी पूरी क्षमता के साथ करने में इंसान को बहुत बड़ी संतुष्टि मिलती है ।

मैंने जो कुछ भी कहा है वह इस इच्छा से कहा है कि हमारे देश के युवा आने वाले कल की जिम्मेदारियों को संभालने के लिए खुद को दृढ़ निश्चय के साथ अनुशासित कर सकें ।

एक लोकतांत्रिक देश का भविष्य सिर्फ कुछ लोगों की महानता पर टिका नहीं होता बल्कि बहुत सारे लोगों के सम्मिलित प्रयासों पर टिका होता है । देश का भविष्य आप सबके हाथों में है और

जैसे-जैसे पुरानी पीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करती हुई गुजरती जाएगी वैसे ही नई पीढ़ी को उनकी जगह लेने के लिए आगे आना है । यदि युवा पीढ़ी एक व्यक्ति और एक नागरिक के रूप में सक्षम होगी तो हमारे देश का भविष्य सचमुच उज्ज्वल होगा । ऐसे वक्त में जबकि आप जीवन के एक नए मुकाम पर खड़े हैं, मैं आप लोगों से गुजारिश करना चाहूँगा कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ गरिमा और आत्मविश्वास से निभाएं । धर्मनिरपेक्षता के बारे में हमारी सोच इतनी स्पष्ट है कि इसे दुबारा परिभाषित करने की जरूरत नहीं है ।

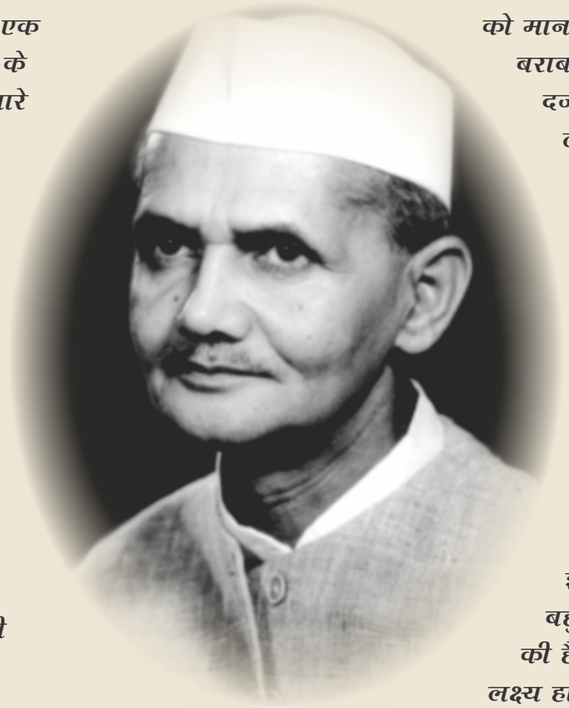

यह हमारे संविधान में परिलक्षित है, जो जाति नस्ल और धर्म से परे हटकर सभी लोगों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करता है ।

हमारा देश तभी प्रगति कर सकता है जब यह तमाम अलगाववादी प्रवृतियों को दरकिनार करते हुए एक संगठित इकाई के रूप में उभरे । हमारे देश में कुछ खास तरह की समस्याऐं हैं और इससे कोई इंकार नहीं कर सकता कि इनमें से कुछ बहुत ही गंभीर हैं लेकिन इनका निदान दृढ़निश्चय और साहस से किया जाना चाहिए । हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य बहुत ही स्पष्ट है । हमारा लक्ष्य है के प्रत्येक नागरिक को जीवन की बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों और उसे अपनी मर्जी का जीवन जीने की आजादी हासिल हो । हमारा लक्ष्य है एक मजबूत और स्वतंत्र लोकतांत्रिक समाज जिसका प्रत्येक नागरिक चाहे वो किसी भी धर्म को मानने वाला हो उसे समाज में बराबरी का और सम्मान का दर्जा हासिल हो । हमारा लक्ष्य है छुआ-छूत को मिटाना और लोगों की आर्थिक स्थिति और सामाजिक हैसियत में गंभीर गैर बराबरी को दूर करना ।

मैंने जो लक्ष्य आपके सामने रखे हैं उन्हें पूरी तरह से हासिल करना इतना आसान नहीं है । मैं मानता हूँ कि हमने इस दिशा में अभी तक बहुत सीमित सफलता प्राप्त की है लेकिन जब तक यह लक्ष्य हासिल नहीं हो जाता तब तक हमें प्रयास करने की जरूरत है।

(19 दिसम्बर 1964 को अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा दिए गए भाषण का अंश)

आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम

हम चलेंगे साथ–साथ एक दिन

भारत में आदिवासियों की एक बड़ी संख्या रहती है जो आधुनिक दुनिया की जीवन शैली से अछूते हैं। देश की कुल आबादी में 8.14 प्रतिशत आदिवासी शामिल हैं, जिनकी संख्या 84510000 (2001 की जनगणना) है और देश के लगभग 15 प्रतिशत क्षेत्र पर बसे हैं। भारत में जनजातीय लोगों की दुनिया की सबसे बड़ी आबादी है जिन्हें आदिवासियों के रूप में भी जाना जाता है। आदिवासियों की प्रमुख विशेषता है– उनकी अपनी समृद्ध संस्कृति, परंपरा, भाषा और जीवन शैली है, वे लोग देश में सबसे गरीब हैं और शिकार, कृषि और मछली पकड़ने पर निर्भर हैं।

जनजातीय आबादी का 52 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे है और चरम स्थिति यह है कि 54 प्रतिशत आदिवासियों की संचार और परिवहन जैसी आर्थिक संपत्ति तक पहुँच नहीं है। जानकारी की कमी, अज्ञान, अशिक्षा और गरीबी से उनका विकास नहीं हुआ है। उनकी मासूमियत और अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों के बारे में समझ की कमी के कारण, वे भोले हैं और अतिवादी समूहों, असामाजिक तत्वों और कट्टरपंथी कार्यकर्ताओं द्वारा फंसाए जा रहे हैं। हालांकि आदिवासी जनसंख्या को समाज की मुख्यधारा में लाने और उन्हें गुमराह नहीं होने में मदद करने के लिए पहले भी प्रयास किए गए हैं, पर इनकी सफलता उत्साहजनक नहीं रही है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों पर आधारित आजीविका सृजन गतिविधियों की आवश्यकता है ताकि रोजगार और कल्याण के अवसर पैदा किये जा सकें।

> सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी युवाओं को सांस्कृतिक, भाषा, जीवन शैली, विकासात्मक गतिविधियों, शैक्षिक अवसर, रोजगार के अवसरों को समझने के लिए देश में विभिन्न स्थानों की यात्रा करने और ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मारकों को देखने का एक अवसर प्रदान करना है।
>
> आदिवासी समुदायों की समृद्ध और परंपरागत सांस्कृतिक विरासत के बारे में जनजातियो को शिक्षित करें और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में सक्षम करें।

इस जरूरत को स्वीकार करते हुए नेहरू युवा केंद्र संगठन ने गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से भारत के आदिवासी समुदाय के समग्र विकास के लिए पिछले पांच साल से सफलतापूर्वक आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इस श्रृंखला में छठे आदिवासी युवा आदान–प्रदान के तहत पांच विभिन्न स्थानों– भुवनेश्वर, (ओडिशा), नागपुर (महाराष्ट्र), तिरुवनंतपुरम (केरल), दिल्ली और बंगलौर (कर्नाटक) पर कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी।

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम का उद्देश्य झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और बिहार के 6 जिलों के 1250 आदिवासी युवाओं के लिए सांस्कृतिक, भाषा, जीवन शैली, विकासात्मक गतिविधियों, शैक्षिक रास्ते को समझने का एक अवसर प्रदान करना रोजगार के अवसर तथा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मारकों को देखने के लिए देश में विभिन्न स्थानों की यात्रा करने का मौका देना है। आदिवासी समुदायों की समृद्ध और परंपरागत सांस्कृतिक विरासत के बारे में जनजातियों को शिक्षित करें ताकि वे इस विरासत को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर सकें।कार्यक्रम आदिवासी युवाओं को देश के अन्य भागों के अपने साथियों से भावनात्मक संबंध विकसित करने में मदद करता है जिससे वे एक दूसरे की पारंपरिक और सांस्कृतिक विरासत को साझा करने और सराहने के साथ ही उनकी कला और शिल्प को सीख और विकास कर सकते हैं।

टीवाईईपी स्थानीय समुदायों, पंचायती राज संस्थाओं और युवाओं के साथ बातचीत करने का भी अवसर प्रदान करता है। प्रत्येक चयनित जिले से 13–35 वर्ष के आयु वर्ग के आदिवासी युवाओं को भाग लेने के लिए चुना गया है। प्रत्येक टीम में 250 युवा होते हैं जिनमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं।

नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा टीवाईईपी को एक बहुत महत्वपूर्ण घटना बनाने के लिए प्रयास किया जाता है जहां काफी भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। यह आदिवासी मुद्दों और जिस स्थिति में वे रहते हैं, उसके प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए किया जाता है।

केरल क्षेत्र की 7 दिन की टीवाईईपी, को 27 जनवरी से 2 फरवरी 2014 तक तिरुवनंतपुरम, केरल में आयोजित किया गया था। मुख्य अतिथि श्री निखिल कुमार, केरल के माननीय राज्यपाल द्वारा इसका उद्घाटन किया गया था। श्री निखिल कुमार ने आधुनिक दुनिया के लिए आदिवासी युवाओं को एकीकृत करने की पहल का स्वागत किया। उन्होंने इस प्रयास की सराहना की और प्रतिभागियों के साथ एक लंबी बातचीत की। श्री. एम सदाचारावेल, क्षेत्रीय निदेशक केरल जोन ने अपने स्वागत भाषण में उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाने और आदिवासी युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्य अतिथि श्री निखिल कुमार, महामहिम राज्यपाल, केरल और और ए. संपत, संसद सदस्य के प्रति आभार व्यक्त किया। बाद में मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों के साथ बातचीत की और प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर दिया। श्री. के. कुन्हामेद, मलप्पुरम के जिला युवा समन्वयक ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया था।

ओडिशा जोन का टीवाईईपी 29 जनवरी से 4 फरवरी 2014 के दौरान केआईआईटी विश्वविद्यालय कैम्पस, भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था। झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार के 16 जिलों और मेजबान राज्य ओडिशा से 250 आदिवासी युवाओं ने इस 7 दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती रीता भगत, क्षेत्रीय निदेशक, ओडिशा ने अपने उद्घाटन भाषण में इन युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के उद्देश्यों पर एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय परिसर के आसपास ले जाया गया। उन्होंने छात्रों और शिक्षकों से बातचीत की और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने की संभावनाओं के बारे में पूछा। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि श्री के. लाल बिहारी हिमिरिका, माननीय मंत्री, अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति विकास, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग, ओडिशा सरकार ने अपने संबोधन में जीवन में चुनौतियों को स्वीकार कर बदलाव का परिचायक बनने के लिए युवाओं का आह्वान किया।

डॉ रमबीर सिंह, निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने समारोह की अध्यक्षता की।भोजन के बाद के सत्र में घुसपैठ और मादक पदार्थों की लत, स्वास्थ्य और स्वच्छता, लाभहीन कृषि और असंगठित विपणन क्षेत्र पर के मुद्दों और समस्याओं आदि पर चर्चा की गई।

31 जनवरी से 6 फरवरी 2014 तक बंगलौर, कर्नाटक में आयोजित कर्नाटक क्षेत्र के टीवाईईपी में 4 राज्यों के 16 जिलों से लगभग 250 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया, किया गया था। प्रख्यात हस्तियों ने सशक्तिकरण, जीवन कौशल, शिक्षा, प्रशिक्षण, कल्याण और विकास योजनाओं के साथ ही जनजातीय क्षेत्रों की समस्याओं और मुद्दों पर बात की। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सलीम अहमद, महानिदेशक, ने.यु.के.सं., दिल्ली द्वारा किया गया, श्री रामलिंगा रेड्डी. माननीय परिवहन मंत्री, कर्नाटक सरकार ने समारोह की अध्यक्षता की और श्री एल पचाउ, कर्नाटक के आईपीएस, डीजी एवं आईजीपी, डॉ. एन नागंबिका देवी, आईएएस, प्रधान सचिव, युवा सशक्तिकरण और खेल, श्री विकास कुमार, आईपीएस, निदेशक, युवा सशक्तिकरण और खेल तथा डॉ के.एन. विजयप्रकाश, निदेशक, जनजाति कल्याण भी उपस्थित थे। श्री. गणपति, आईपीएस. संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार और श्री प्रभाकांत, आईआरएस, ईडी, ने.यु.के.सं. ने आदिवासी युवाओं के साथ बातचीत की। श्री के.जे. जार्ज, माननीय गृह मंत्री, कर्नाटक सरकार और श्री अभयचंद्र जैन, युवा सशक्तिकरण एवं खेल मंत्रालय, कर्नाटक सरकार ने विशेष आमंत्रितों के रूप में भाग लिया और समापन समारोह की शोभा बढ़ाई।

महाराष्ट्र क्षेत्र का टीवाईईपी, 17–23 फरवरी 2014 के दौरान नागपुर में आयोजित किया गया था। सुश्री पल्लवी, श्री अभिषेक कृष्णा कार्यक्रम के अतिथि थे। समापन समारोह 23 फरवरी, 2014 को आयोजित किया गया था, श्री दिलजीत सिंह चौधरी, आईपीएस मुख्य अतिथि थे, श्री अनूप कुमार सिंह अतिथि के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया।

दिल्ली जोन का कार्यक्रम 24 से 30 मार्च 2014 के दौरान अलीपुर, दिल्ली में आयोजित किया गया था। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति अनिल आर दवे, भारत के उच्चतम न्यायालय ने युवाओं से अपने क्षेत्रों में एकता बनाए रखने और जानकारी साझा करने के लिए कहा और उनके संबंधित क्षेत्रों में रहने वाले सभी लोगों के साथ इस कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान और जानकारी को साझा करने के लिए कहा। श्री राजीव गुप्ता, सचिव, युवा मामले, भारत सरकार ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर बोलते हुए श्री गुप्ता ने कहा कि यह युवा नेतृत्व को लेकर स्वरोजगार

प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए न्यायमूर्ति एआर दवे, उच्चतम न्यायालय

उपक्रम शुरू करने का सही समय है, उन्होंने सूचित किया कि कौशल विकास कार्यक्रमों को बड़े पैमाने पर आरंभ किया जाएगा। उन्होंने प्रतिभागियों को देश की सांस्कृतिक विविधता और एकता को समझने की सलाह भी दी।

प्रतिभागियों को राष्ट्रपति भवन देखने और भारत के राष्ट्रपति से मिलने का एक अनूठा अवसर मिला। इस अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रपति ने इस युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम को बनाने के लिए नेहरू युवा केंद्र संगठन (ने.यु.के.सं.) और गृह मंत्रालय को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से छत्तीसगढ़, ओडिशा, बिहार और झारखंड राज्यों के इन आदिवासी युवाओं को शांति, सद्भाव और हमारे देश की क्षेत्रीय अखंडता का संदेश प्रचारित करने वाले राजदूतों में बदलने में मदद मिलेगी। जहां से आदिवासी युवा आए हैं उनमें से कई राज्यों को अपनी अनूठी संस्कृति और विरासत के लिए लंबे समय से जाना जाता है। वे एक समृद्ध जैव विविधता और वन एवं खनिज संसाधनों के रूप में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के साथ संपन्न रहे हैं। उन राज्यों ने राजनीति, प्रशासन, कला, खेल और संस्कृति जैसे विविध क्षेत्रों में दिग्गजों को जन्म दिया है।

माननीय राष्ट्रपति ने कहा कि ऐसे आदान–प्रदान कार्यक्रम शहरी क्षेत्रों के लोगों को आदिवासी समाज के पारंपरिक ज्ञान को जानने के लिए भी एक उपयोगी मंच के रूप में काम करेंगे। वे प्रकृति के साथ जिस प्रकार सद्भाव से रहते हैं उस तरीके में आदिवासी समूहों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। वैश्विक संकट के इस समय में जब राष्ट्रों को जल, जंगल, ईंधन आदि बुनियादी संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ रहा है, आदिवासी समाज ने हमारे पर्यावरण के लिए किसी भी खतरे के बिना अपने जीवन के साधारण तरीके को बनाए रखा है।

माननीय राष्ट्रपति ने युवा प्रतिभागियों से उनके समाज में उनके सहयोगियों, रिश्तेदारों, बड़ों और अन्य लोगों के साथ युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के लिए अपनी यात्रा की यादों को साझा करने और शांति और विकास के राजदूत के रूप में अपने राज्य में लौटने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि वे कल के युवाओं और उभरते भारत के लिए मशाल वाहक हैं और हमारे देश में परिवर्तन लाने की जिम्मेदारी उनके कंधों पर है। उन्होंने उनके भावी प्रयासों के लिए उन्हें शुभ कामना दी और आशा व्यक्त की कि वे सभी व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से खुद के लिए और न केवल उस जगह के लोगों के लिए जहां से वे आए हैं बल्कि पूरे देश के लिए ख्याति लाएंगे।

ऊपर के सभी स्थानों में प्रतिभागियों को कार्यक्रमों में उन्हें उपलब्ध कराई गई सुविधाओं का उपयोग करने और कल्याण और विकास योजनाओं के रूप में प्रदान किए गए अवसर से लाभ उठाने के लिए कहा गया था। इसके अलावा उनके संबंधित स्थानों में वापस जाने के बाद अपने समुदाय के सदस्यों के साथ अनुभवों को साझा करने के लिए भी कहा गया। छठे आदिवासी युवा आदान–प्रदान कार्यक्रम के हिस्से के रूप में प्रतिभागियों द्वारा एक अनुवर्ती कार्रवाई की योजना विकसित की गयी थी जो मौजूदा ताकत, संसाधनों को पहचानने उनमें अंतराल ढूँढने और एक उपयुक्त रणनीति के माध्यम से उनके ठीक से समन्वय के द्वारा उनके समग्र विकास को कार्यक्रमों को लागू किया जा सके।

राष्ट्रीय एकता शिविर

हर कदम बढ़ते चले, मंजिलें पाने को

ने.यु.के.सं. उन विचारशील व्यक्ति विशेष युवाओं को जो राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान दे सकते हैं, को मंच उपलब्ध करवाने के प्रयास में देशभर में राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित करता रहा है। ये शिविर विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का उत्साहवर्धक मिश्रण है जो न सिर्फ भारतीय संस्कृति की जीवतंता को मनाता है बल्कि युवाओं को बेरोजगारी, एचआईवी/एडस, कन्या भ्रूण हत्या आदि जैसे मुद्दों पर दिमाग झकझोरने के लिए मंच उपलब्ध करवाता है। ये राष्ट्रीय एकता शिविर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यमों से हमारे राष्ट्र की विविधता को दर्शाने के अवसर उपलब्ध करवाते हैं। यह युवाओं के व्यक्तित्व और कौशल को पारस्परिक क्रियाओं, क्षमताओं निर्माण की पहलों को बढ़ाने में समर्थन करता और जोखिम धारकों एवं नागरिक सोसाइटी संस्थाओं को एकसाथ एक छत के नीचे लाकर दिशा उपलब्ध करवाता है।

माननीय गर्वनर श्री राम नरेश यादव, राष्ट्रीय एकता शिविर का उद्घाटन दीप प्रज्वलन करते हुए

ने.यु.के.सं. कोर का विश्वास इस तथ्य में है कि युवा ऊर्जा को सही दिशा के मार्ग में ले जाना ही वास्तव में देश के विकास परिदृश्य में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। देशभर में राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित करना ने.यु.के.सं. के कार्यक्रम में शामिल है। जागरण लेक सिटी यूनिवर्सिटी, भोपाल में एक ऐसा शिविर आयोजित किया गया, जहां युवाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने–अपने राज्य की संस्कृति और परंपरा को दर्शाया। दस राज्यों जैसे कि आंध्र प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, असम, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, आदि से 250 से अधिक युवाओं ने इस शिविर में भाग लिया। मध्य प्रदेश के गर्वनर श्री राम नरेश यादव ने युवाओं को संबोधित करते हुए युवाओं को किसी यूनिवर्सिटी के साथ संगठित प्रयास से सहयोग करके सामाजिक बुराइयों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

आयोजन कमेटी के सदस्य श्री बिजेंद्र प्रताप सिंह (ने.यु.के.सं. के वाइस–चेयरमैन) ने कहा, ''ग्रामीण युवाओं द्वारा उनकी महान सांस्कृतिक विरासत को सभी भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभेदों के बावजूद इकट्ठे होकर प्रस्तुत करते हुए उन्हें देखना एक शानदार अनुभूति है।''

सन् 1972 का वर्ष, जब से ने.यु.के.सं. स्थापित हुआ था तब से यह ग्रामीण युवाओं को राष्ट्रीय निर्माण प्रक्रिया में भाग लेने के लिए कई अवसर प्रदान करता आ रहा है। उनको कई व्यावसायिक कार्यक्रमों में उनके व्यक्तित्व और कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। ने.यु.के.सं. 623 जिलों में 2 लाख से अधिक युवाओं को पंजीकृत करके सक्रिय है। ने.यु.के.सं. युवा विकास के विभिन्न मंचों पर युवा मामले मंत्रालय के विभिन्न कार्यक्रमों और अन्य मंत्रालयों के साथ समन्वय एवं सहयोग के कार्यक्रम चला रहा है। ऐसे शिविर युवाओं में राष्ट्रीय सद्भावना और गौरव पैदा करने का माध्यम हैं।

आने वाले एक वर्ष में ने.यु.के.सं. की ऐसे दस राष्ट्रीय एकता शिविर आयोजित करने की योजना है जिससे देश के दूर–दराज क्षेत्रों की दूरी को पार करके युवा एक साथ होकर इसमें भाग लेंगे। एक ऐसा शिविर जम्मू एवं कश्मीर राज्य में आयोजित

माननीय गर्वनर श्री राम नरेश यादव लोगों को राष्ट्रीय एकता की शपथ दिलाते हुए

राष्ट्रीय एकता शिविर में डॉ. एस.एन. सुब्बा राव, राष्ट्रीय युवा योजना (एनवाईपी) वृक्ष लगा रहे हैं

श्री अरूण सारावगी, मंडल निदेशक, ने.यु.के.सं., श्री आस्कर फर्नांडिस (पूर्व केंद्रीय मंत्री) और श्री एन. राधाकृष्णन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

किया गया जबकि अन्य को विशेषरूप से सभी क्षेत्रों और राज्यों से अधिकतम भागीदारी और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए रखा जाएगा। इस प्रकार के शिविर राज्यों के सांस्कृतिक लोकाचार को प्रदर्शित करने और उनकी अद्वितीय पहचान को उजागर करने का उपयुक्त माध्यम है। यह भारत की विविधता में एकता मनाने का तरीका है।

ग्रामीण युवा भारतीय संस्कृति के सच्चे राजदूत हैं और ये शिविर भारतीय संस्कृति के असंख्य रंगो चाहे वे भाषा, भोजन, कपड़े, धरोहर या परंपरा हो, को फैलाने में सहयोग देते हैं। ऐसा इन्हीं शिविरों द्वारा होता है कि युवा उन विशेष मामलों पर काम करते हैं जो संबंधित राज्यों के विचार के विषय हैं। युवाओं को विभिन्न क्षमता निर्माण पहलों के द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है जिनसे उनकी नौकरी या काम करने की संभावनाओं में वृद्धि होती है और अप्रत्यक्ष रूप से उत्तर–पूर्वी राज्यों में नक्सलवाद और पंजाब में ड्रग्स, नशे और इसी प्रकार के अन्य मुद्दों को को संबोधित करते हैं। यह युवाओं को स्वयं को भ्रष्ट और हिंसा की गतिविधियों में शामिल होने के बजाए अपनी जिंदगी को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए सशक्त एवं उत्साही बनाते हैं।

ने.यु.के.सं. को शिक्षण सस्थाओं के साथ अन्य नागरिक सोसाइटी संगठनों से भी जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिली है जिसने इन राष्ट्रीय एकता शिविरों को आयोजित करने में अप्रत्याशित समर्थन प्रदान किया है। ये हितधारक युवाओं के विकास की तरफ भी अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का काम कर रहे हैं जो ने.यु.के.सं. के युवाओं के सशक्तिकरण और उनको विकास के परिदृश्य की मुख्यधारा में लाने के एजेंडों को आगे बढ़ाएंगे। भविष्य में ने.यु.के.सं. कारपोरेट सेक्टर से सहायता लेना चाहेगा क्योंकि उनका सहयोग कन्या भ्रूण हत्या, एचआइवी/एड्स पर जागरूकता फैलाने और ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर जैसे मुद्दों पर विशेष कार्य में सहायक हो सकता है। ग्रामीण युवा विकास के लिए अधिकतम कारपोरेट सहायता एकत्र करना इनकी दूरदृष्टि है।

युवा प्रवासी भारतीय दिवस

अपने युवाओं से जुड़ने की अनूठी पहल

प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) प्रवासी भारतीय मामले मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रवासी भारतीय के साथ अर्थपूर्ण एकता बनाने के लिए आयोजित किया जाता है जो उनके मुद्दों और समस्याओं को संबोधित करता है। यह प्रवासी भारतीयों को एक अद्वितीय मंच उपलब्ध करवाता है ताकि वे आपस में और भारतीय सरकार एवं विभिन्न भारतीय राज्यों के गर्वनरों के साथ विचार विमर्श कर सकें।

पीबीडी 2014 का मुख्य केंद्र युवा थे। इस अवसर से अपेक्षा की जाती है कि वे युवा प्रवासी भारतीयों के शक्तिशाली नेटवर्क की नई सीमाएं खोले जो सभी क्षेत्रों में भारतीय युवाओं के जुड़ने में योगदान देगा। युवा मामले एवं खेल मंत्रालय इस अवसर का भागीदार मंत्रालय था।

श्री वलायती रवी, प्रवासी भारतीय मामले के मंत्री ने युवा प्रवासी भारतीय दिवस का उदघाटन करते हुए,आग्रहपूर्वक कहा कि प्रवासी भारतीय और भारतीय युवाओं को व्यापार, उद्योग, उद्यम और सामाजिक कार्यों में भागीदारी को आगे बढ़ाने हेतु एक मजबूत नेटवर्क बनाने के लिए एक साथ आगे आना चाहिए। ''हमारा लक्ष्य इस प्रयोजन के लिए युवाओं के एक मजबूत वैश्विक संबंधों का निर्माण करना चाहिए।

श्री. जितेंद्र सिंह, राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) युवा मामले एवं खेल, ने घोषित किया कि नई युवा नीति युवाओं में उत्पादक कार्य बल विकसित करने पर केंद्रित होगी जिसमें उन्हें सही शिक्षा और कौशल प्रदान करना एवं उद्यमशीलता को बढ़ावा देना; प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल के माध्यम से मजबूत एवं स्वस्थ पीढ़ी विकसित करना और स्वस्थ जीवनशैली एवं खेलों को प्रोत्साहित करना; सामुदायिक सेवा के लिए सामाजिक मूल्यों और भावना को बढ़ावा देना; प्रभावशाली ढंग से युवाओं को जोड़ना और प्रशासनिक प्रक्रिया में उनका भाग लेना, शामिल है।

श्री राजीव गुप्ता, सचिव, युवा मामले विभाग, युवा मामले एवं खेल मंत्रालय ने धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस भारतीय युवाओं को उनके प्रवासी प्रतिस्थानियों से मिलने और बातचीत करने के अवसर प्रदान करने के लिए एक मजबूत मंच तैयार किया गया है।

नेहरू युवा केंद्र संगठन ने देशभर से 150 युवाओं को पीबीडी के क्रियाकलापों में भाग लेने और प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया। वहां विशेष सत्रों को आयोजन किया गया जो रोजगार, कौशल विकास और उद्यमशीलता जैसे मुद्दो पर केंद्रित थे।

ने.यु.के.सं. ने प्रतिनिधियों के लिए भरूच गुजरात से सिडी गोमा नृत्य जैसे पारंपरिक नृत्य का आयोजन किया। मिस्टर सब्बीर की अगुवाई में सिडी गोमा डांस ग्रुप द्वारा सिडी गोमा नृत्य प्रस्तुत किया गया। दूसरा नृत्य जिसने काफी प्रशंसा पाई वह छाऊ नृत्य था जो कि भारतीय आदिवासी सामरिक नृत्य का एक प्रकार है और यह भारतीय राज्यों ओडिसा, झारखंड और पश्चिम बंगाल में लोकप्रिय है। छाऊ नृत्य पश्चिम बंगाल के पुरलिया जिले के नितायी महातो एवं ग्रुप द्वारा प्रस्तुत किया गया था। एक अन्य बहुत शानदार नृत्य जिसने अशोक होटल, नई दिल्ली के प्रतिनिधियों को काफी आकर्षित किया वह पारंपरिक ओडिसी नृत्य था जिसे ओडिसा के कृष्ण कुमार दास एवं ग्रुप ने प्रस्तुत किया।

ने.यु.के.सं. ने विज्ञान भवन में एक युवा कृति का आयोजन किया जहां युवाओं ने अपने हस्तशिल्प उत्पाद प्रदर्शित किए। शिल्पियों को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, मुरादाबाद, जम्मू एवं कश्मीर के अंनतनाग और कर्नाटक के बिदर से आमंत्रित किया गया था।

प्रवासी भारतीय दिवस के अंतिम दिन पर अपने समापन भाषण में भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने स्पष्ट किया कि भारतीय अर्थव्यवस्था को बदलने में शिक्षा एक मुख्य कारक है। उन्होंने भारतीय प्रवासियों का आह्वान किया कि वे भारतीय शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ और समेकित करने के लिए अपना सहयोग दें।

यह वास्तव में ने.यु.के.सं. और उसके युवाओं के लिए एक महान क्षण था जब वे प्रवासी भारतीय दिवस में प्रतिनिधियों के रूप में शामिल हुए और अपने साथी देशवासियों से बातचीत करने का अवसर मिला जो मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम के कारण भारत आए थे।

युवा पर्यावरण सेना

ग्रीन वोटिंग का अनोखा अभियान

लोगों को बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण और प्रकृति में असंतुलन के प्रति जागरूक करने की जरूरत है। ने.यु.के. प्रतापगढ़ (उ.प्र.) के युवा मंडल ने पर्यावरण के मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने का दायित्व लिया है। 'जय प्रकृति, जय जगत' के नारे के साथ पर्यावरण और प्रकृति को बचाने के लिए युवा मंडल ने एक सेना बनाई है।

हम मनधाता ब्लॉक, गांव खरगरा के युवा सहयोग संस्थान के विषय में बात कर रहें हैं जहां युवा इकट्ठे हुए और पर्यावरण सेना की नींव रखी।

2 अगस्त, 2002 से प्रदूषण पर अंकुश लगाने एवं प्रकृति की चमक–दमक वापिस दिलवाने के प्रयास में पर्यावरण सेना, श्री अजय क्रांतिकारी के नेतृत्व में कई कार्यक्रमों को शुरू कर रही है।

वर्तमान परिदृश्य में श्री अजय क्रांतिकारी युवा मंडल के अध्यक्ष हैं जो पर्यावरण सुरक्षा के इस आंदोलन में अगुवाई कर रहा है। वातावरण सुरक्षा की गतिविधियां 'जय प्रकृति, जय जगत' नारे के अंतर्गत राज्य के 25 जिलों में फैलाई जा चुकी है। निवासियों को वृक्षा रोपण, वन कटाव रोकने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाता है।

मंडल, हजारों स्वयं सेवकों जिसे पर्यावरण सेना भी कहते हैं, के द्वारा गांवों को पेड़ों की सुरक्षा, अधिक पेड़ लगाने, पर्यावरण खाता योजना, जल संरक्षण, प्लास्टिक एवं पॉलिथीन के का उपयोग नहीं करने और ध्वनि प्रदूषण के प्रति संवेदनशील बनाया जाता है। लोगों को पर्यावरण संरक्षण की वैकल्पिक विधियों जैसे धुआं रहित चूल्हे, सोलर कूकर, वृक्षारोपण अभियान आदि को बढ़ावा देने के बारे में भी सिखाया जाता है।

युवा मंडल द्वारा विद्यार्थियों के लिए भी प्रतापगढ़ में पहली बार पर्यावरण पर आधारित परीक्षाएं आयोजित की गई। 5000 से अधिक ने अपने पर्यावरण संबंधित ज्ञान की जांच करने के लिए परीक्षा दी। होनहार विद्यार्थियों को 'जय श्री, वन श्री' और 'वायु श्री' पुरस्कार दिए गए।

इस मुद्दे पर जिला प्रशासन युवा सहयोग संस्थान द्वारा लिए गए कार्यक्रमों और पहल को पूर्ण समर्थन देता है।

2014 में लोकसभा के चुनावों के दौरान एक ही सांस में काम करते हुए पर्यावरण सेना ने न सिर्फ वोट के अधिकारों के विषय में ही बात की बल्कि प्रकृति और पर्यावरण प्रणाली पर भी चर्चा की। श्री सुरेंद्र सिंह, जिला मजिस्ट्रेट के समर्थन से तथा श्री समर बहादुर सिंह, जिला युवा समन्वयक के नेतृत्व में मंडल ने मतदाताओं को उनके मताधिकार और पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक किया। पर्यावरण मामलों की इस सेना ने बहुत लोगों को अभियान से जोड़ा किया जिसे 'ग्रीन वोटिंग अभियान' नाम दिया गया। एक आकर्षक नारा जैसे कि 'बटन दबाओ, पेड़ लगाओ – लोकतंत्र और सृष्टि बचाओ' बहुत लोकप्रिय हुआ।

10,000 स्वंयसेवकों ने मत देने की शपथ ली और 2,000 वृक्ष भी लगाए।

श्री अजय क्रांतिकारी और उनके साथी बिना थके मिशनरी तरीके से काम करते हैं और जिले में उत्कृष्ट पर्यावरण–रक्षक के रूप में अपने लिए जगह बना ली है।

श्रद्धांजलि

आनन्द प्रकाश घिलडियाल (1955 – 2014)

नेहरू युवा केंद्र संगठन ने श्री आंनद पी. घिलडियाल, मंडल निदेशक, उत्तराखंड के 11 मार्च, 2014 को दिवंगत होने पर उनके परिवार एवं उनके नजदीकी संबंधियों को गहरी सवेंदना और सहानूभुति व्यक्त की। उनको ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा जो मिलनसार थे और जिन्होंने ने.यु.के.सं. संगठन को मजबूत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हम उन्हें हमेशा याद रखेगें । उनकी स्मृतियों एवं सेवाओं को संजो के रखेंगे।

भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

हम अपनी गहरी संवेदना श्री टी. मलायिहा (1962–2014) करीम नगर, आंध्र प्रदेश और श्री अनिल मिंज (1974–2014) लोहारदग्गा, झारखंड के शोक संतप्त परिवारों को भी व्यक्त करते हैं।

हम नेहरू युवा केन्द्र संगठन को मजबूत संगठन बनाने के लिए दी गई उनकी सेवाओं को हमेशा याद रखेंगे।

नेहरु युवा केन्द्र संगठन

कौशल विकास, उद्यमिता, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार

स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर जिला केन्द्र, दिल्ली - 110 092

फोन : +91 11 2240 2800 | फैक्स : +91 11 2244 6069 | Web: www.nyks.org